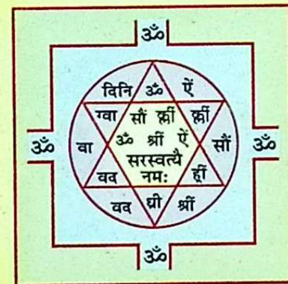
सरस्वती स्तोत्र

एवं

पूजा पद्धति

भाषा टीका सहित

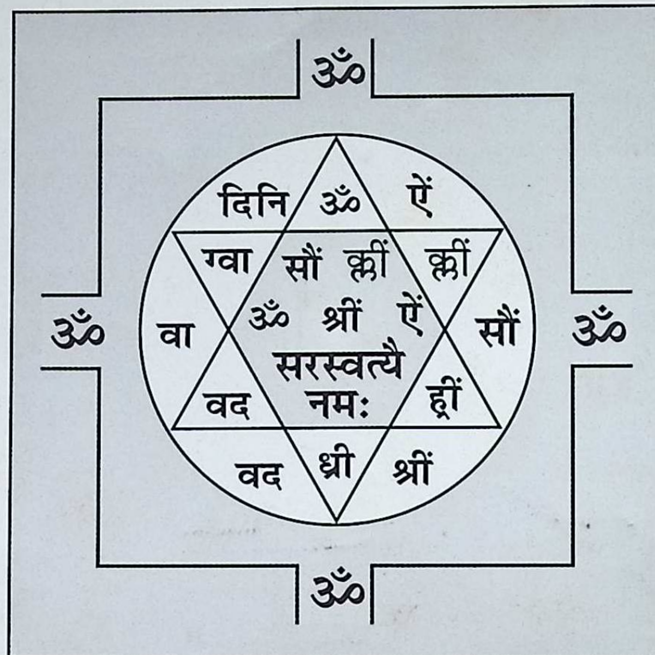


प्रकाशक

नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली-११०००६

श्री सरस्वती यंत्र



सरस्वती स्तोत्र एवं पूजा पद्धति

भाषा टीका सहित

कवच, स्तव, सिद्धसरस्वती स्तोत्रम्, नीलसरस्वती स्तोत्रम्,
सरस्वत्यष्टकम्, सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलिः,
चालीसा, आरती सहित

सन् १८७४ ई० पूर्व स्थापित पुस्तक प्रकाशन परम्परा

— प्रकाशक —

卐 नाथ पुस्तक भण्डार

१९४-दरीबा कलां, दिल्ली- ११०००६

प्रकाशकः–

卐 नाथ पुस्तक भण्डार
१९४-दरीबा कलां, दिल्ली- ११०००६

दूरभाषः-२३२७ ५३४४

सम्पादक –पं. संजीव शर्मा ज्योतिषी, जींद वाले (हरियाणा)
सुपौत्र पं. सुखदेव, राज ज्योतिषी

प्रथमावृत्ति –मार्च, सन् २००९

मूल्यः रु. २५.००　　　　डाक व्यय पृथक्

शिवनाथ



सरस्वती महाभागे, विद्ये कमललोचने ।
विद्यारूपि विशालाक्षि, विद्यां देहि नमोऽस्तुते ॥

शरणागतदीनार्त्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्त्तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥

अनुक्रमणिका

भूमिका

नारायण ने कहा हे वत्स नारद! यजुर्वेद के अन्तर्गत काण्वशाखा की जन्मदाता सरस्वती की पूजा विधि समन्वित जैसी पद्धति प्रचलित है वह कहता हूँ सुनो– माघ शुक्ल पंचमी वा विद्या आरम्भ दिन के पहिले दिन शांत चित्त होकर स्नान के बाद जनेऊ आदि को बदल कर तंत्रोक्त विधान से भक्तिपूर्वक घट स्थापना करे । (पूजा विधि आगे दी गई है) इसके उपरान्त गणपति पूजा करके ध्यान करे ।

ध्यान जो सरस्वती शुक्लवर्ण हास्य युक्त मनोहर है । जिनके शरीर की प्रभा से करोड़ चन्द्रमा की प्रभा भी मलिनता धारण करती है । जिनका परिधान अग्नि परीक्षित विशुद्ध पट्टवस्त्र है । जिनके हाथ में वीणा यंत्र और पुस्तक है । जो सर्वोत्कृष्ट रत्नजात नव भूषणों से विभूषित है । ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वरादि देवतागण सदा जिनकी पूजा करते हैं । जो मुनीन्द्र, मनु और मनुष्यों से सर्वदा वंदित होती है मैं भक्ति भाव से उन्हीं शुक्लवर्णा हास्यानना मनोहरा सरस्वती की वन्दना करता हूँ ।

विचक्षण पुरुष इस प्रकार ध्यान करके सब द्रव्य मूलमंत्र उच्चारणपूर्वक प्रदान करे। फिर स्तवपाठ और कवच धारणपूर्वक पृथ्वी में गिर कर दण्डवत प्रणाम करे। हे मुनिवर! यह देवी सरस्वती जिनकी इष्ट देवता है उनकी तो बात ही नहीं। इसके अतिरिक्त सर्व साधारण को विद्यारम्भ दिवस में और वर्ष के अन्त में माघ शुक्ल पंचमी के दिन सरस्वती की पूजा करनी चाहिये। अष्टाक्षर युक्त मंत्र ही सरस्वती का मूलमंत्र है अथवा जो जिस मंत्र में दीक्षित हो वही उनका मूलमंत्र है अत एव निज मूलमंत्र से हो, वो सरस्वती शब्द में चतुर्थी मिलाकर "स्वाहा" पर्यन्त शेष धरकर। उसके पहिले प्रणव श्रीं ह्रीं बीज उच्चारणपूर्वक उस मंत्र से अर्थात् "श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा" इस अष्टाक्षर मंत्र से सरस्वती को संपूर्ण वस्तु प्रदान करे। लक्ष्मी मायादिक यह मंत्र ही कल्पवृक्ष है अर्थात् कल्पवृक्ष के निकट से जिस प्रकार संपूर्ण अभीष्ट लाभ होता है उसी प्रकार इस मंत्र से भी संपूर्ण अभीष्ट लाभ होता है।

कृपानिधि नारायण ने पूर्वकाल के समय पुण्यक्षेत्र भारतवर्ष में गंगा तटपर वाल्मीकि को यह मंत्र प्रदान किया इसके उपरान्त भृगुने एक समय सूर्य ग्रहण के समय पुष्करतीर्थ में महर्षि शुक्राचार्य को, मरीचि ने चन्द्रग्रहण के समय बृहस्पति को, बदरिकाश्रम में ब्रह्मा

ने भृगुको, क्षीर सागर के तटपर जरत्कारुने आस्तीक को, सुमेरु पर्वत में विभाण्डक ने धीमान् ऋष्यशृङ्ग को, शिव ने कणाद और गौतम को, सूर्य ने याज्ञवल्क्य और कात्यायनको, अनन्त देव ने पाताल तट में बलि सभा में पाणिनीधीमान् भारद्वाज और शाकटायन को यह मंत्र प्रदान किया था। इस मंत्र को चार लाख बार जपने से ही सिद्धि होती हैं मंत्र सिद्ध होने से ही बृहस्पति के समान शक्तिशाली हो जाता है।

पूर्वकाल के समय विश्वस्त्रष्टा ब्रह्माजी ने गंधमादन पर्वत में भृगुको विश्वजय नामक जो कवच प्रदान किया था, उसको कहता हूँ। सूनो– एक समय भृगुने सर्वेश्वर सर्वपूजित ब्रह्मा से कहा, हे ब्रह्मन्! आप सब वेद वेत्ताओं में अग्रणी हैं। वेदज्ञान विषय में आपके समान दूसरा नहीं है। यही क्या? आपको अविदित कुछ भी नहीं है, अर्थात् आप सभी जानते हैं, क्योंकि समस्त संसार ही आपसे उत्पन्न हुआ है, अत एव हे प्रभो! जो निर्दोष और समस्त मंत्र गुणों से सम्पूर्ण हैं आप वही सर्वोत्कृष्ट विश्व विजय नामक सरस्वती कवच मुझे सुनाने की कृपा कीजिये। ब्रह्माजी बोले हे वत्स! तुमने जो सुन्दर मनोहर वेद विहित वेद पूजित सर्वाभीष्टप्रद सरस्वती कवच को पूछा सो कहता हूँ सुनो–

सबसे पहले रासेश्वर विभु श्रीकृष्ण ने गोलोकधाम में वृन्दावन नामक अरण्य में रासोत्सव के समय रासमंडल में वह सरस्वती कवच मुझसे कहा था । यह कवच अति गोपनीय और कल्पवृक्ष के समान जो पहले कभी नहीं सुना गया है अद्भुत मंत्रों से परिपूर्ण है । यह कवच पाठ और धारण करके बृहस्पति बुद्धिवेत्ता विषय में अग्रणी हुए हैं इसी कवच के बल से शुक्राचार्य ने दैत्यों के निकट प्रधानता प्राप्त की है । इसी कवच के पाठ से मुनिवर वाल्मीकि ने वाग्मिता प्राप्त करके कवीन्द्र पद में आरोहण किया है स्वायंभुवमनु इसको धारण करके सर्वत्र पूजित हुए है । कणाद, गौतम, कण्व, पाणिनि, शाकटायन, दक्ष, कात्यायन ये सभी इस कवच के प्रभाव से ग्रंथकार पद में अभिषिक्त हुए हैं । कृष्णद्वैपायन वेद व्यास ने इस कवच को धारण करके वेद विभाग और अठारह पुराण की रचना की है। शातातप, संवर्त्तवसिष्ठ पराशर और याज्ञवल्क्य सरस्वती कवच को धारण और पाठ करके ग्रंथकार हुए हैं । ऋष्यशृङ्ग, भारद्वाज, आस्तीक, देवल, जैगीषव्य और ययाति इन सबने इसके ही बल से सर्वत्र समान आदर प्राप्त किया है ।



पूजा विधि प्रारम्भ

सभी धार्मिक कार्यों के आरम्भ में कुछ क्रियाएं समान रुप से की जाती हैं । वे हैं आत्म-शुद्धि, आसनशुद्धि, संकल्प, स्वस्तिवाचन, मंगलपाठ, श्रीगणेश पूजन आदि । तदनन्तर प्रधान देवों का पूजन विधान है ।

स्नान करके शुद्ध आसन में पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठे । पूजा की सम्पूर्ण सामग्री एकत्रित करके किसी थाली में रखें । घी का दीपक जलाकर मूर्ति के सामने रखें । तब यह मंत्र पढ़ते हुए चारों ओर जल छिड़के ।

मंत्र: **ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।**
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

इसके बाद तीन बार आचमन करें-

ॐ केशवाय नमः। ॐ माधवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ गोविन्दाय नमः। हाथ धो लें ।

भूमि पूजन हाथ में चावल, पुष्प आदि लेकर भूमि पूजन करें ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम् ॥

दीप पूजन दीपक का पूजन करे पुष्प रोली अर्पित करे ।

भो दीप देव रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव ॥



स्वस्तिवाचनम्

भद्रं कर्णेभिःशृणुयाम देवाः भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा

यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। ॐ गणानां त्वागणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् ॥ ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन । ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ (बायें हाथ में फूल, चावल लेकर दायें हाथ से नमः के साथ अर्पित करें ।)

श्रीमन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः । उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः । ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः । ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः । ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः।। स्थानदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः ॐ एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरण-कमलेभ्यो नमः । ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः।

(फिर हाथ में फूल, चावल लेवें ।)

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः । लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ।। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः । द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ।। शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं

चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥ अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः । सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्य समप्रभ! । निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥ सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि! नमोऽस्तु ते ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम् । येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव । विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः । येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः । तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम ॥ अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते । तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ॥ स्मृते सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते । पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम् ॥ सर्वेष्वारम्भकार्येषु

त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः । देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ विश्वेशं माधवं दुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम् । वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम् ॥ विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान् । सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्मार्थसिद्धये ॥

❀❀❀



"हरिः ॐ तत्सत्। नमः परमात्मने श्री पुराणपुरुषोत्तमाय श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलि-प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गतक्षेत्रे

षष्टिसंवत्सराणां मध्ये 'अमुक' नाम्नि संवत्सरे, 'अमुक' अयने, 'अमुक' ऋतौ, 'अमुक' मासे, 'अमुक' पक्षे, 'अमुक' तिथौ, 'अमुक' नक्षत्रे, 'अमुक' योगे, 'वासरे' 'अमुक' राशिस्थितेसूर्ये, 'चन्द्रे, सोमे, बुधे, बृहस्पतौ, शुक्रे, शनौ, राहौ, केतौ एवं गुणगणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ 'अमुक' गोत्रोत्पन्न 'अमुक' नाम शर्मा (वर्मादि) ऽहं श्री विद्या, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-श्रीलाभहेतवे श्रीगणपत्यादिना सह सरस्वतीपूजनमहं करिष्ये।"

संकल्प के पुष्प अक्षत जलपात्र में छोड़ दें, तत्पश्चात् श्रीगणेश जी का पूजन कर नमस्कार करें ।

गौरी गणेश पूजा

ध्यान हाथ जोड़कर गणेश जी का ध्यान करें ।

गजनाननं भूतगणाधिसेवितं कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपङ्कजम् ॥

आवाहन हाथ जोड़कर गणेश जी का आवाहन करें ।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥

प्रतिष्ठा हाथ में फूल अक्षत लेकर प्रतिष्ठा हेतु प्रार्थना करें ।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामोंꣳ प्रतिष्ठ ॥

फूल अक्षत को गणेश जी के पास छोड़ दें ।

ध्यान फिर हाथ में फूल लेकर गौरी जी का ध्यान करें ।

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः ।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥

फूल को गौरी जी के पास छोड़ दें ।

आवाहन हाथ जोड़कर गौरी जी का आवाहन करें ।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन ।
ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

फूल अक्षत हाथ में लिए प्रतिष्ठा हेतु प्रार्थना करें ।

प्रतिष्ठा फूल अक्षत को गौरी जी के पास छोड़ दें ।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ७ँ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामोंऽ प्रतिष्ठ ॥

तत्पश्चात् गौरी गणेश जी की पूजा प्रारम्भ करें ।

चन्दनम् तिलक लगायें ।

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः ।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥

अक्षतान् चावल चढ़ायें ।

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

पुष्पमालाम् फूलमाला पहनाऐं ।

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः ।
अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्ण्वः ॥

धूपम् धूप दिखाऐं ।

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः।
देवानामसि वह्नितमꣳ सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम् ॥

दीपम् दीप दिखाऐं ।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा । अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्य्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा ॥

नैवेद्यम् भोग निवेदित करें एवं जल छोड़ दें ।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष१ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२ ॥ अकल्पयन् ॥ ॐ प्राणाय स्वाहा । ॐ अपानाय स्वाहा । ॐ व्यानाय स्वाहा । ॐ उदानाय स्वाहा । ॐ समानाय स्वाहा ।

ऋतुफलम् फल चढ़ाऐं ।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व१ँ हसः ॥

ताम्बूलम् पान, सुपारी, लौंग, इलायची आदि चढ़ायें ।

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥

दक्षिणा-द्रव्यम् दक्षिणा चढ़ाऐं ।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

गणेश जी के समक्ष अर्पण कर दें ।

प्रार्थना हाथ में फूल लेकर प्रार्थना करें ।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

ॐ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥

आरर्तिक्यम् कपूर की आरती करें एवं हाथ धो लें ।

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये ।

आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि । अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त ॥ ॐ आ रात्रि पार्थिवꣳ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदाꣳसि बृहती वि तिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥

पुष्पाञ्जलि

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥

प्रदक्षिणा

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः । तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि। यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे ॥

कलश में वरुण का ध्यान और आवाहन हाथ जोड़कर ध्यान करें ।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुष॰ स मा न आयु प्र मोषीः ॥ अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं स शक्तिकमावाहयामि ।

कलश पूजा

कलश में देवी-देवताओं का आवाहन हाथ जोड़कर करें ।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥

अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धुकावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

प्रतिष्ठा हाथ में फूल अक्षत लेकर प्रतिष्ठा हेतु प्रार्थना करें ।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ छ समिमं दधातु । विश्वे देवास इह मादयन्तामोंऽम्प्रतिष्ठ ॥ अस्मिन् कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु । ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः।

प्रार्थना कलश में वरुणादि की पंचोपचार पूजा कर प्रार्थना करें ।

नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय ।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥
'ॐ अपांपतये वरुणाय नमः ।'

समर्पण

कृतेन अनेन पूजनेन कलशे वरुणाद्यावाहितदेवता: प्रीयन्तां न मम ।

षोडशमातृका पूजनम्

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः ॥ धृति पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ॥

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मइषाण सर्वलोकंम्मइषाण ।

या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः । श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम् ॥

सरस्वती पूजनम्

(श्रीमद्देवीभागवत नवम स्कंध चतुर्थ अध्याय श्लोक ५२ से उद्धृत)

ऋष्यादिन्यास ॐ कण्वऋषये नमः–शिरसि । ॐ विराट्छन्दसे नमः–मुखे। ॐ वागीश्वरीदेवतायै नमः–हृदि।

वर्णन्यास ॐ वं नमः–शिरसि। ॐ दं नमः–दक्षिणश्रवणे। ॐ वं नमः–वामश्रवणे। ॐ दं नमः–दक्षिणनेत्रे। ॐ वां नमः–वामनेत्रे। ॐ ग्वां

नमः-दक्षिणनासायाम्। ॐ दिं नमः-वामनासायाम्। ॐ निं नमः-मुखे। ॐ स्वां नमः-लिङ्गे। ॐ हां नमः-गुदे।

करन्यास ॐ अं कं खं गं घं ङं आं-अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं-तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं-मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं-अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं पं फं बं भं मं औं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः-करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

अङ्गन्यास ॐ अं कं खं गं घं ङं आं-हृदयाय नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं-शिरसे स्वाहा। ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं-शिखायै वषट्। ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं-कवचाय हुम्। ॐ ओं पं फं बं भं मं औं-नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं अः-अस्त्राय फट्।

ध्यान

या कुन्देन्तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥१॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा ध्यानम् समर्पयामि ।

आवाहनम्

मुनीन्द्रवृन्दारकवृन्दवन्द्ये! विद्वज्जनाराधितपादयुग्मे! ।
श्रीशारदे शारदाकान्तियुक्त! आवाहयेत्त्वां भव सम्मुखीना ॥

ॐ चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती ।

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा आवाहनं समर्पयामि ।

आसनम्

अनेकरत्नोत्थमयूखदीव्यत् प्रतप्तजाम्बूनदपादविद्धम् ।
महार्हवस्त्राङ्कितपृष्ठभागं गृहाण पीठं कविवन्दनीये ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा आसनं समर्पयामि ।

पाद्यम्

संतप्तकार्तस्वरनिर्मितेऽस्मिन् भृङ्गारपात्रेऽतिपवित्रयुक्ते ।
स्थितं जलं जह्नुसुतोपनीतं गृहाण पाद्यं विनिवेदितं मे ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।

अर्घ्यम्

उत्फुल्लपङ्केरुहमल्लिकुन्दसुवर्णचाम्पेयकदम्बपुष्पैः ।
समन्वितं हस्ततलस्थितं मे गृहाण वागीश्वरि पूतमर्घ्यम् ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि ।

आचमनीयम्

विद्वज्जनानन्दकरे! सुपूज्ये! समस्तदेवासुरवन्दनीये! ।
सुशीतलं वारिसुगन्धयुक्तं तमोपहन्त्र्याचमनं गृहाण ॥

श्रीं ह्लीं सरस्वत्यै स्वाहा आचमनीयं समर्पयामि ।

स्नानम्

कस्तूरी-कर्पूरसुचन्दनादिसुगन्धिद्रव्यैः परिवासितेन ।
शुद्धेन तीर्थोदकसंयुतेन जलेन सद्यः सवनं कुरू त्वम् ॥

श्रीं ह्लीं सरस्वत्यै स्वाहा स्नानं समर्पयामि । तदन्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

पञ्चामृतम्

दध्ना सुदेवि! पयसा सितया घृतेन संसाधितेन मधुना मधुनाऽधुनैव ।
पूतेन जह्नुतनया जलमिश्रितेन पञ्चामृतेन सवनमुररीकुरुष्व ॥

श्रीं ह्लीं सरस्वत्यै स्वाहा पञ्चामृतं समर्पयामि ।

महाभिषेकस्नानम्

पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ॥१॥
चोदयित्री सूनृतानां चेतन्ती सुमतीनाम् । यज्ञं दधे सरस्वती ॥२॥
महो अर्णः सरस्वती प्रचेतयति केतुना । धियो विश्वा वि राजति ॥३॥

शुद्धोदकस्नानम्

सुवर्णकलशानीतैः नानागन्ध सुवासितैः ।
शुद्धोदकस्नानमिदं स्वीकुरुष्व सुरेश्वरि ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि ।

वस्त्रम्

कार्पाससूत्रपरिनिर्मितनिष्प्रवीणं संवासितं सुरनुते! पटवासचूर्णैः ।
कल्याणि! भो विवुधमानसराजहंसि! वस्त्रं गृहाणं मम देवि निवेदितं ते॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा वस्त्रम् समर्पयामि ।

उपवस्त्रम्

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा उपवस्त्रम् समर्पयामि ।

गन्धम्

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा गन्धं समर्पयामि ।

पुष्पम्

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि शारदे ।
पूजार्थानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वरि ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा पुष्पमालां समर्पयामि ।

मधुपर्कः

सूर्यांशुसंतप्तशरीरखेदापनोदने युक्तमतीवसौम्यम् ।
मयोपनीतं जगदम्बिके! त्वं गृहाण मात! मधुपर्कमेनम् ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा मधुपर्कम् समर्पयामि ।

कुङ्कुमम्

प्रफुल्लरक्तोत्पलकान्तितुल्यं परिस्फुरद्गन्धयुतं सुरम्यम् ।
मयार्पितं कुङ्कुमदिव्यचूर्णं गृहाण पापौघविनाशदक्षे ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा कुङ्कुमं समर्पयामि ।

अङ्गपूजनम्

निम्नलिखित चौबीस नामों से गन्ध पुष्प अर्पणकर अंग पूजा करें-

१. ब्रह्माण्यै नमः	पादौ पूजयामि
२. ब्रह्मण्यमूर्त्यै नमः	गुल्फौ पूजयामि
३. जगत्स्वरूपायै नमः	जङ्घे पूजयामि
४. जगद्धात्र्यै नमः	जानुनी पूजयामि
५. चारुविलासिन्यै नमः	उरू पूजयामि
६. कमलभूषितायै नमः	कटिं पूजयामि
७. जन्महीनायै नमः	जघनं पूजयामि
८. गम्भीरनाभ्यै नमः	नाभिं पूजयामि
९. वारिपूज्यायै नमः	उदरं पूजयामि
१०. लोकमात्रे नमः	स्तनौ पूजयामि
११. विशालवक्षसे नमः	वक्षःस्थलं पूजयामि
१२. सुविपश्चिते नमः	कण्ठं पूजयामि
१३. स्कन्दप्रपूज्यायै नमः	स्कन्धौ पूजयामि
१४. दीर्घ सुबाहवे नमः	बाहू पूजयामि
१५. पुस्तकधारिण्यै नमः	हस्तौ पूजयामि
१६. श्रोत्रियजभवे नमः	श्रोत्रे पूजयामि
१७. वेदस्वरूपायै नमः	वक्त्रं पूजयामि
१८. सुनासायै नमः	नासिकां पूजयामि
१९. बिम्बसमानोष्ठ्यै नमः	औष्ठौ पूजयामि
२०. कमलचक्षुषे नमः	नेत्रे पूजयामि
२१. तिलकधारिण्यै नमः	भालं पूजयामि
२२. चन्द्रमूर्तये नमः	केशान् पूजयामि
२३. सर्वेश्वर्यै सरस्वत्यै नमः	शिरः पूजयामि
२४. ब्रह्मरूपिण्यै नमः	सर्वाङ्गं पूजयामि

धूपम्

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा धूपम् समर्पयामि ।

दीपम्

कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा दीपं दर्शयामि समर्पयामि ।

नैवेद्यम्

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा नैवेद्यं समर्पयामि ।

ताम्बूलम्

एलालवङ्गादियुक्तं सुरम्यं पूगाकुखण्डैरपिमिश्रितं यत् ।
लोकेशलोकेशयपूजनीये! सुपक्वताम्बूलमिदं गृहाण ॥

श्रीं ह्लीं सरस्वत्यै स्वाहा ताम्बूलं फलं च समर्पयामि ।

दक्षिणाम्

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥

श्रीं ह्लीं सरस्वत्यै स्वाहा द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि ।

नीराजनम्

इन्द्रादिदिक्पालकिरीटन्यस्तरत्नप्रभारञ्जितपादयुग्मे! ।
अये सुधीमानसराजहंसि नीराजनं स्वीकुरु वन्दनीये! ॥

श्रीं ह्लीं सरस्वत्यै स्वाहा नीराजनं समर्पयामि ।

पुष्पाञ्जलिः

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआवह ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

प्रदक्षिणा

तां म ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा प्रदक्षिणां समर्पयामि ।

प्रणाम

पाहि पाहि जगद्वन्द्ये नमस्ते भक्तवत्सले ।
नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं नमो नमः ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा नमस्कारं समर्पयामि ।

स्तवनम्

व्रजन्ति दूरं दुरितानि यस्याः ध्यानेन संपत्तय आश्रयन्ते ।
कारुण्यपूर्णादुरितापहा सा समस्तपापक्षयमातनोतु ॥१॥
पाशाङ्कुशधरा वीणा वीणा-पुस्तकधारिणी ।
मम वक्त्रे वसेन्नित्यं दुग्ध-कुन्देन्दु-निर्मला ॥२॥
चतुर्दशसु विद्यासु रमते या सरस्वती ।
चतुर्दशसु लोकेषु या एका पूज्यपादुका ॥३॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा स्तवनं समर्पयामि ।

विसर्जनम्

युवर्ठ० सुराममश्विना नमुचावासुरे सचा ।
विपिपानाः सरस्वतीन्द्रं कर्मस्वावत ॥

पुत्रमिव पितरावश्विनोभेन्द्रावथुः काव्यैर्दर्ठ० सनाभिः ।
यत्सुरामं व्यपिबः शचीभिः सरस्वती त्वा मघवन्नभिष्णक् ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तामीश्वरीम् ॥

अपराध-सहस्त्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया ।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा विसर्जनं समर्पयामि ।

संक्षिप्त सरस्वतीपूजा प्रयोगः सम्पूर्णः



सरस्वती कवच

विनियोगः कवचस्यास्य विप्रेन्द्र ऋषिरेव प्रजापतिः ॥ स्वयं छन्दश्च बृहती देवता शारदाम्बिका ॥ सर्वतत्त्वपरिज्ञानसर्वार्थसाधनेषु च ॥ कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥

ब्रह्मोवाच

श्रृणु वत्स प्रवक्ष्यामि कवचं सर्वकामदम् ।
श्रुतिसारं श्रुतिसुखं श्रुत्युक्तं श्रुतिपूजितम् ॥१॥

ब्रह्माजी ने कहा–पुत्र, मैं समस्त कामनाओं को पूर्ण करने वाला कवच तुम्हें बताता हूँ सुनो– यह श्रुतियों का सार, कर्ण के लिए सुखप्रद, वेदों में प्रतिपादित तथा उनसे अनुमोदित है ॥१॥

उक्तं कृष्णेन गोलोके मह्यं वृन्दावने वने ।
रासेश्वरेण विभुना रासे वै रासमण्डले ॥२॥

रासेश्वर भगवान् कृष्ण गोलोक़ में विराजित थे। वहीं वृन्दावन में रासमण्डल भी था ॥२॥

अतीव गोपनीयं च कल्पवृक्षसमं परम् ।
अश्रुताद्भुतमन्त्राणां समूहैश्च समन्वितम् ॥३॥

उसी समय उन प्रभु ने मुझसे इस कवच का वर्णन किया था, कल्पवृक्ष के समान यह कवच अत्यन्त गोपनीय है । जिस मन्त्रों को अभी तक किसी ने नहीं सुना है वे समस्त अद्‌भुत मन्त्र इसमें सम्मिलित हैं ॥३॥

यद् धृत्वा भगवाञ्छुक्रः सर्वदैत्येषु पूजितः ।
यद् धृत्वा पठनाद् ब्रह्मन् बुद्धिमांश्च बृहस्पतिः ॥४॥

इसे धारण करने के कारण ही शुक्राचार्य समस्त दैत्यों के पूज्य बन सके । हे ब्रह्मन्! बृहस्पति अर्थात् गुरु में इतनी बुद्धि का समावेश इस कवच की महिमा से ही हो पाया ॥४॥

पठनाद्धारणाद्वाग्मी कवीन्द्रो वाल्मिको मुनिः ।
स्वायम्भुवो मनुश्चैव यद् धृत्वा सर्वपूजितः ॥५॥

मुनि वाल्मीकि सदैव इसका पाठ और सरस्वती का ध्यान करते थे, इसी कारणवश उन्हें कवीन्द्र कहलाने का सौभाग्य प्राप्त हो गया । वे बोलने में अतिचतुर हो गये, इसे धारण करके स्वायम्भुव मनु ने सभी से पूजा प्राप्त की ॥५॥

कणादो गौतमः कण्वः पाणिनिः शाकटायनः ।
ग्रन्थं चकार यद् धृत्वा दक्षः कात्यायनः स्वयम् ॥६॥

कणाद, गौतम, कण्व, पाणिनि, शाकटायन, दक्ष तथा कात्यायन ने इस कवच को धारण करके ही ग्रन्थों की रचना करने में सफल हुए ॥६॥

धृत्वा वेदविभागं च पुराणान्यखिलानि च ।
चकार लीलामात्रेण कृष्णद्वैपायनः स्वयम् ॥७॥

इसे धारण करके स्वयं ही कृष्णद्वैपायन व्यासदेव ने वेदों का विभाग कर क्रीड़ा ही क्रीड़ा में अखिल पुराणों की रचना की ॥७॥

शातातपश्च संवर्तो वसिष्ठश्च पराशरः ।
यद् धृत्वा पठनाद् ग्रन्थं याज्ञवल्क्यश्चकार सः ॥८॥
ऋष्यशृङ्गो भरद्वाजश्चास्तिको देवलस्तथा ।
जैगीषव्यो ययातिश्च धृत्वा सर्वत्र पूजिताः ॥९॥

शातातप, संवर्त, वशिष्ठ, पाराशर, याज्ञवल्क्य, ऋष्यशृङ्ग, भारद्वाज, आस्तीक, देवल, जैगीषव्य तथा ययाति ने इस कवच के साथ ही सम्पूर्ण ग्रन्थ का अध्ययन किया । इसी से सर्वत्र उनका गान होने लगा ॥८-९॥

कवचस्यास्य विप्रेन्द्र ऋषिरेव प्रजापतिः ।
स्वयं छन्दश्च बृहती देवता शारदाम्बिका ॥१०॥

सर्वतत्त्वपरिज्ञान-सर्वार्थसाधनेषु च ।
कवितासु च सर्वासु विनियोगः प्रकीर्तितः ॥११॥

हे विप्रेन्द्र! इस कवच के ऋषि प्रजापति हैं । स्वयं बृहतीछन्द हैं । माता शारदा अधिष्ठात्री देवी हैं । अखिल तत्त्व परिज्ञान पूर्वक समस्त अर्थ के साधन और सभी कविताओं के विवेचन में इसका उपयोग किया जाता है ॥१०-११॥

श्रीं ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहा शिरो मे पातु सर्वतः ।
श्रीं वाग्देवतायै स्वाहा भालं मे सर्वदाऽवतु ॥१२॥

श्रीं ह्रीं स्वरूपिणी भगवती माँ सभी ओर से मेरे सिर की रक्षा करें । श्रीमयी वाग्देवता सदैव मेरे ललाट की रक्षा करें ॥१२॥

ॐ ह्रीं सरस्वत्यै स्वाहेति श्रोत्रे पातु निरन्तरम् ।
श्रीं ह्रीं भगवत्यै स्वाहा नेत्रयुग्मं सदाऽवतु ॥१३॥

ॐ ह्रीं भगवती सरस्वती देवी सदैव मेरे कर्णों की रक्षा करें। ॐ ह्रीं भगवती सरस्वती देवी सदैव मेरे दोनों नेत्रों की रक्षा करें ॥१३॥

ऐं ह्रीं वाग्वादिन्यै स्वाहा नासां मे सर्वदाऽवतु।
ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा चोष्ठं सदाऽवतु ॥१४॥

ऐं ह्रीं स्वरूपिणी वाणी अधिष्ठात्री देवी सदैव मेरी नासिका की रक्षा करें। ह्रीं विद्या की अधिष्ठात्री देवी सदा मेरे ओष्ठ की रक्षा करें ॥१४॥

ॐ श्रीं ह्रीं ब्राह्मयै स्वाहेति दन्तपङ्क्तिं सदाऽवतु।
ऐमित्येकाक्षरो मन्त्रो मम कण्ठं सदाऽवतु ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं भगवती ब्राह्मी मेरी दन्तपंक्ति की सदैव रक्षा करें। 'ऐं' यह देवी सरस्वती का एकाक्षर मन्त्र है, यह मेरे कण्ठ की रक्षा करें ॥१५॥

ॐ श्रीं ह्रीं पातु मे ग्रीवां स्कन्धौ मे श्रीं सदाऽवतु।
ॐ ह्रीं विद्याधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा वक्षः सदाऽवतु ॥१६॥

ॐ ह्रीं मेरे गले की रक्षा करें और श्रीं मेरे कन्धों की सदैव रक्षा करें । विद्या की अधिष्ठात्री देवी ॐ ह्रीं स्वरूपिणी सरस्वती सदैव मेरे वक्षःस्थल की रक्षा करें ॥१६॥

ॐ ह्रीं विद्याधिस्वरूपायै स्वाहा मे पातु नाभिकाम् ।
ॐ ह्रीं क्लीं वाण्यै स्वाहेति मम हस्तौ सदाऽवतु ॥१७॥
ॐ सर्ववर्णात्मिकायै पादयुग्मं सदाऽवतु ।
ॐ वागधिष्ठातृदेव्यै स्वाहा मां सदाऽवतु ॥१८॥
ॐ सर्वकण्ठवासिन्यै स्वाहा प्राच्यां सदाऽवतु ।
ॐ सर्वजिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहाग्निदिशि रक्षतु ॥१९॥

विद्याधिस्वरूपा ॐ ह्रींमयी देवी मेरी नाभि की रक्षा करें । ॐ ह्रीं क्लीं स्वरूपिणी देवी सदैव मेरे दोनों हाथों की रक्षा करें । ॐ स्वरूपिणी भगवती सर्ववर्णात्मिका मेरे दोनों पैरों की सदैव रक्षा करें । ॐ वाग् अधिष्ठात्री देवी के द्वारा मैं सभी प्रकार से सदैव सुरक्षित रहूँ । सभी के कण्ठ में निवास करने वाली ॐ स्वरूपा देवी पूर्व दिशा में मेरी रक्षा करें । सभी

की जिह्वा के अग्रभाग पर सदैव विराजित रहने वाली ॐ स्वरूपिणी देवी अग्निकोण में सदैव मेरी रक्षा करें ॥१७-१९॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा ।
सततं मन्त्रराजोऽयं दक्षिणे मां सदाऽवतु ॥२०॥

'ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं सरस्वत्यै बुधजनन्यै स्वाहा' इस मन्त्र को मन्त्रराज कहते हैं। यह इसी रूप में सदैव विराजित रहता है, यह सदैव मेरे दक्षिणभाग की रक्षा करें ॥२०॥

ऐं ह्रीं श्रीं त्र्यक्षरो मन्त्रो नैर्ऋत्यां सर्वदाऽवतु ।
ॐ ऐं जिह्वाग्रवासिन्यै स्वाहा मां वारुणेऽवतु ॥२१॥
ॐ सर्वाम्बिकायै स्वाहा वायव्ये मां सदाऽवतु ।
ॐ ऐं श्रीं क्लीं गद्यवासिन्यै स्वाहा मामुत्तरेऽवतु ॥२२॥

'ऐं ह्रीं श्रीं' यह त्र्यक्षर मन्त्र नैर्ऋत्यकोण में सदैव मेरी रक्षा करे, जिह्वा के अग्रभाग में रहने वाली ॐ ऐं स्वरूपिणी देवी पश्चिम दिशा में सदैव मेरी रक्षा करें। ॐ स्वरूपिणी

भगवती सर्वाम्बिका वायव्यकोण में सदैव मेरी रक्षा करे । गद्य में निवास करने वाली ॐ ऐं श्रींक्लींमयी देवी उत्तरदिशा में मेरी सदैव रक्षा करें ॥२१-२२॥

ऐं सर्वशास्त्रवासिन्यै स्वाहैशान्यां सदाऽवतु ।
ॐ ह्रीं सर्वपूजितायै स्वाहा चोर्ध्वं सदाऽवतु ॥२३॥
ह्रीं पुस्तकवासिन्यै स्वाहाऽधो मां सदाऽवतु ।
ॐ ग्रन्थबीजस्वरूपायै स्वाहा मां सर्वतोऽवतु ॥२४॥

समस्त शास्त्रों में विराजित होने वाली ऐं स्वरूपिणी देवी ईशानकोण में सदैव मेरी रक्षा करें । पुस्तक में निवास करने वाली ह्रीं स्वरूपिणी देवी मेरे निम्न भाग की सदैव रक्षा करे। ॐ स्वरूपिणी ग्रन्थबीजस्वरूपा देवी सभी ओर से सदैव मेरी रक्षा करें ॥२३-२४॥

इति ते कथितं विप्र ब्रह्ममन्त्रौघविग्रहम् ।
इदं विश्वजयं नाम कवचं ब्रह्मरूपकम् ॥२५॥

हे विप्र! इस सरस्वती कवच का वर्णन मैंने तुमसे कर दिया है, असंख्य ब्रह्ममन्त्रों का यह मूर्तिमान् विग्रह है । ब्रह्मस्वरूप इस कवच को विश्वजय कहते हैं ॥२५॥

पुरा श्रुतं धर्मवक्त्रात् पर्वते गन्धमादने ।
तव स्नेहान्मयाऽऽख्यातं प्रवक्तव्यं न कस्यचित् ॥२६॥
गुरुमभ्यर्च्य विधिवद्वस्त्रालंकारचन्दनैः ।
प्रणम्य दण्डवद्भूमौ कवचं धारयेत् सुधीः ॥२७॥

प्राचीनकाल की बात है गन्धमादन पर्वत पर धर्मदेव के मुख से मुझे इसे श्रवण करने का सुअवसर प्राप्त हुआ था । तुम मेरे परमप्रिय हो । इसलिये मैंने तुमसे इसका वर्णन किया है। तुम्हें अन्य किसी के समक्ष इस कवच का वर्णन नहीं करना चाहिये, क्योंकि विद्वान पुरुष को चाहिए कि वस्त्र, चन्दन तथा अलंकारादि वस्तुओं से विधिपूर्वक अपने गुरु की पूजा व अर्चना करके दण्ड के तुल्य भूमि पर गिरकर उन्हें प्रणाम करें । उपरान्त उन्हीं से इस कवच का पूर्ण अध्ययन व ज्ञान प्राप्त करें ॥२६-२७॥

पञ्चलक्षजपेनैव सिद्धं तु कवचं भवेत् ।
यदि स्यात् सिद्धकवचो बृहस्पतिसमो भवेत् ॥२८॥
महावाग्मी कवीन्द्रश्च त्रैलोक्यविजयी भवेत् ।
शक्नोति सर्वं जेतुं च कवचस्य प्रसादतः ॥२९॥
इदं च कण्वशाखोक्तं कवचं कथितं मुने ।
स्तोत्रं पूजाविधानं च ध्यानं च वन्दनं शृणु ॥३०॥

पाँच लाख जप करने के उपरान्त यह कवच सिद्ध हो सकता है । इस कवच के सिद्ध हो जाने पर पुरुष को बृहस्पति के तुल्य सम्पूर्ण योग्यता प्राप्त हो सकती है । इस कवच के प्रसाद से पुरुष बोलने में अति चतुर, कवियों का राजा तथा तीनों लोकों में विजय प्राप्त करने वाला हो सकता है । उसमें सबकुछ करने की योग्यता इस कवच के प्रभाव से स्वयं आ जाती है । हे मुनिवर! कण्वशाखा में कहे हुए कवच को मैं कहा और इसके बाद पूजा विधि ध्यान और वाग्देवी की स्तुति को सुनों ॥२८-३०॥

॥ श्रीमद्देवीभागवते महापुराणे नवम् स्कन्धे चतुर्थोऽध्याये हिन्दी टीका सहितं सरस्वती कवचम् सम्पूर्णम् ॥



सरस्वती स्तव

श्रीनारायण उवाच

वाग्देवतायाः स्तवनं श्रूयतां सर्वकामदम् ।
महामुनिर्याज्ञवल्क्यो येन तुष्टाव तां पुरा ॥१॥

नारायण ने कहा हे वत्स नारद! पूर्वकाल के समय ऋषिवर याज्ञवल्क्य ने जिस स्तोत्र से वाग्देवी सरस्वती का स्तव किया था. इस समय सर्वकामप्रद उन्हीं सरस्वती का स्तव कीर्त्तन करता हूं सुनो ॥१॥

गुरुशापाच्च स मुनिर्हतविद्यो बभूव ह ।
तदाऽऽजगाम दुःखार्तो रविस्थानं सुपुण्यदम् ॥२॥

मुनिवर याज्ञवल्क्य गुरुशाप के कारण समस्तदेवादि भूलकर अत्यन्त दुःखित चित्त से पुण्यप्रद रविस्थान में गये ॥२॥

संप्राप्य तपसा सूर्यं लोलार्के दृष्टिगोचरे ।
तुष्टाव सूर्यं शोकेन रुरोद च मुहुर्मुहुः ॥३॥

वहां कुछ काल तपस्या के पीछे सूर्य देव के नयन गोचर होनेपर अति शोक में पीडित हो वारंवार रोदन करते हुये उनकी स्तुति में प्रवृत्त हुए ॥३॥

सूर्यस्तं पाठयामास वेदं वेदाङ्गमीश्वर ।
उवाच स्तौहि वाग्देवीं भक्त्या च स्मृतिहेतवे ॥४॥

तब भगवान् सूर्य ने प्रसन्न होकर उनको संपूर्ण वेद और वेदाङ्गशिक्षा प्रदान पूर्वक कहा हे वत्स! अब तुम स्मरण शक्ति प्राप्ति के लिये भक्ति सहित वाग्देवीका स्तव करो ॥४॥

तमित्युक्त्वा दीननाथोऽप्यंतर्धान चकार सः ।
मुनिः स्नात्वा च तुष्टाव भक्तिनम्रात्मकंधरः ॥५॥

दिवाकर यह कहते ही वहां से अन्तर्धान हो गये इधर मुनिवर याज्ञवल्क्य स्नान करके भक्तिपूर्वक मस्तक झुकाय वाग्देवी के भक्ति में प्रवृत्त हुए ॥५॥

याज्ञवल्क्य उवाच

कृपां कुरु जगन्मातर्मामेवं हततेजसम् ।
गुरुशापात्स्मृतिभ्रष्टं विद्याहीनं च दुःखितम् ॥६॥

याज्ञवल्क्य ने कहा हे मातः! गुरु के शाप से मति भ्रष्ट हुई है मैं विद्याहीन और तेज हीन हो गया हूँ मेरे दुःख की अवधि नहीं है हे जगजननी! मुझ पर कृपा करो ॥६॥

ज्ञानं देहि स्मृतिं विद्यां शक्तिं शिष्यप्रबोधिनीम् ।
ग्रन्थकर्तृत्वशक्तिं च सुशिष्यं सुप्रतिष्ठितम् ॥७॥

मुझ को ज्ञान, विद्या, स्मृति, शिष्य बोधिनी शक्ति, ग्रन्थकर्तृत्व और प्रतिभा सम्पन्न सुशिष्यत्व प्रदान करो ॥७॥

प्रतिभां सत्सभायां च विचारक्षमतां शुभाम् ।
लुप्तं सर्वं दैवयोगान्नवीभूतं पुनः कुरु ॥८॥

जिससे सज्जनों के समाज में मेरी भी भलीभांति प्रतिभा और विचार शक्ति प्रसारित हो दैव के दुर्विपाक से मेरा जो कुछ नष्ट हुआ है उसे पुनः प्रदान करो ॥८॥

यथाऽङ्कुरं भस्मनि च करोति देवता पुनः ।
ब्रह्मस्वरूपा परमा ज्योतिरूपा सनातनी ॥९॥

वह भस्मराशिसमुद्धत बीजांकुर के समान संपूर्ण मेरे उत्पादि का शक्ति शून्य चित्त क्षेत्र में उदय होकर पुनर्वार नवीनभाव धारण करे । हे मातः! तुम ही ब्रह्मस्वरूपिणी तुम ही सर्वश्रेष्ठ तुम ही ज्योतिः स्वरूपा तुम ही सनातनी हो ॥९॥

सर्वविद्याधिदेवी या तस्यै वाण्यै नमो नमः ।
विसर्गबिंदुमात्रासु तदधिष्ठानमेव च ॥१०॥

और तुम ही समस्तविद्या की अधिष्ठात्री देवी हो इस कारण तुम को बारंबार नमस्कार करता हूँ हे मात! अनुस्वार विसर्ग और चन्द्रबिंदु जिन वर्ण का आश्रय करके रहते हैं ॥१०॥

तदधिष्ठात्री या देवी तस्यै नीत्यै नमो नमः ।
व्याख्या स्वरूपा सा देवी व्याख्याधिष्ठातृरूपिणी ॥११॥

तुम वही वर्णस्वरूपिणी हो अतएव तुमको नमस्कार है, हे मातः! तुम ही शास्त्र की व्याख्या स्वरूप और तुम ही समस्त व्याख्या की अधिष्ठात्री देवी हो ॥११॥

यया बिना प्रसंख्यावान्संख्या कर्तुं न शक्यते ।
कालसंख्या स्वरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः ॥१२॥

तुम्हारे बिना गणित विद्या के पारदर्शी भी किसी विषय की गणना करने में समर्थ नहीं हैं अतएव तुम कालगणना की संख्या स्वरूप हो ॥१२॥

भ्रमसिद्धान्तरूपा या तस्यै देव्यै नमो नमः ।
स्मृतिशक्तिर्ज्ञानशक्तिर्बुद्धिशक्तिस्स्वरूपिणी ॥१३॥

तुम ही मनुष्यों का भ्रमभंजन करने वाली सिद्धान्त शक्तिरूप हो अतएव तुमको बारंबार नमस्कार है हे मातः! तुम ही स्मृति शक्ति, तुम ही ज्ञान शक्ति, तुम ही बुद्धिशक्ति स्वरूपिणी हो ॥१३॥

प्रतिभाकल्पनाशक्तिर्या च तस्यै नमो नमः ।
सनत्कुमारो ब्रह्माणं ज्ञानं पप्रच्छ यत्र वै ॥१४॥

तुम ही प्रतिभाशक्ति और तुम ही कल्पनाशक्ति हो अतएव बारंबार तुमको प्रणाम करते हैं स्वयं सनत्कुमार ने भी जब भ्रमयुक्त होकर ब्रह्माजी से प्रश्न किया ॥१४॥

बभूव मूकवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः ।
तदाऽऽजगाम भगवानात्मा श्रीकृष्ण ईश्वरः ॥१५॥

तब वह उनका सिद्धान्त करने में असमर्थ होकर मूक के समान निरुत्तर रहे तब परमात्मा-रूपी परमेश्वर श्रीकृष्ण ने वहां उपस्थित होकर ॥१५॥

उवाच स च तां स्तौहि वाणीमिष्टां प्रजापते ।
स च तुष्टाव तां ब्रह्मा चाज्ञया परमात्मनः ॥१६॥

कहा हे प्रजापते! तुम अभीष्टदात्री बागीश्वरीका स्तव करो तो तुम्हारा सिद्धान्त स्थिर होगा तब चतुरानन ने परमेश्वर की आज्ञानुसार देवी सरस्वती का स्तव करके ॥१६॥

चकार तत्प्रसादेन तदा सिद्धान्तमुत्तमम् ।
यदाप्यनंतं पप्रच्छ ज्ञानमेकं वसुन्धरा ॥१७॥

उनके प्रसाद बल से अति उत्तम सिद्धान्त स्थिर किया । एक दिन वसुन्धरा ने संदिग्ध चित्र से अनन्त देव के निकट प्रश्न किया ॥१७॥

बभूव मूकवत्सोऽपि सिद्धान्तं कर्तुमक्षमः ।
तदा तां सं च तुष्टाव संत्रस्तः कश्यपाज्ञया ॥१८॥

तब वह भी सिद्धान्त स्थिर करने में असमर्थ होकर मूक के समान निरुत्तर रहे अन्त में महाभीत हो कश्यप की आज्ञानुसार तुम्हारा स्तव करने से ॥१८॥

ततश्चकार सिद्धांत निर्मलं भ्रमभञ्जनम् ।
व्यासः पुराणसूत्रं च पप्रच्छ वाल्मिकिं यदा ॥१९॥

उनका भ्रम दूर होकर सिद्धान्त स्थिर हुआ जब श्रीवेदव्यासजी ने वाल्मीकि के निकट जाकर पुराणसूत्र का विषय पूँछा ॥१९॥

मौनीभूतश्च सस्मार तामेव जगदम्बिकाम् ।
तदा चकार सिद्धान्तं निर्मल भ्रमभञ्जनम् ॥२०॥

तब मुनिवर बाल्मीकि ने हतबुद्धि होकर जगत् की माता स्वरूप तुमको स्मरण किया तुम्हारे प्रसाद से ज्ञान ज्योति के प्रकाशित होने पर ऋषिवर का भ्रमान्धकार दूर हुआ ॥२०॥

संप्राप्य निर्मलं ज्ञानं भ्रमांध्यध्वंसदीपकम् ।
पुराणसूत्रं श्रुत्वा च व्यासः कृष्णकुलोद्भवः ॥२१॥

तब वह श्रीवेदव्यास के किये प्रश्न के विषय का सिद्धान्त स्थिर करने में समर्थ हुए तब कृष्णांशोत्पन्न श्रीव्यास देवजी ने महर्षि वाल्मीकिजी के मुख से पुराण सूत्र का विषय सुनकर तुम्हारी महिमा जानी ॥२१॥

तां शिवां वेद दध्यौ च शतवर्षं च पुष्करे ।
तदा त्वत्तो वरं प्राप्य सत्कवीन्द्रो बभूव ह ॥२२॥

और फिर पुष्करतीर्थ में जाय शतवर्षपर्यन्त शाक्तिदात्री स्वरूप तुम्हारी आराधना में प्रवृत्त हुए उसके पीछे तुम्हारे प्रसन्न होकर उनको वर देने से वह कवीन्द्र पदवी में आरूढ़ हुए ॥२२॥

तदा वेदविभागं च पुराणं च चकार सः ।
यदा महेन्द्रः पप्रच्छ तत्त्वज्ञानं सदाशिवम् ॥२३॥

फिर उन्होंने वेद विभाग और अठारह पुराणों की रचना करी जब महेन्द्र ने सदाशिव से तत्व ज्ञान की कथा पूछी ॥२३॥

क्षणं तामेव संचिन्त्य तस्मै ज्ञानं ददौ विभु ।
पप्रच्छ शब्दशास्त्रं च महेन्द्रश्च बृहस्पतिम् ॥२४॥

तब सदाशिव ने क्षणकाल तुम्हारी चिन्ता करके तत्वज्ञान का उपदेश प्रदान किया फिर एक समय देवराज ने सुरुगुरु बृहस्पतिजी के निकट शब्दशास्त्र विषय प्रश्न पूछा ॥२४॥

दिव्यं वर्षसहस्त्रं च स त्वां दध्यौ च पुष्करे ।
तदा त्वत्तो वरं प्राप्य दिव्यवर्षसहस्त्रकम् ॥२५॥

तब उन्होंने उसके उत्तर देने में असमर्थ होकर पुष्कर तीर्थ में जाय देवपरिणाम से हजार वर्ष पर्यन्त तुम्हारी आराधना कंरके तुम से वर पाया ॥२५॥

उवाच शब्दशास्त्रं च तदर्थं च सुरेश्वरम् ।
अध्यापिताश्च ये शिष्या यैरधीतं मुनीश्वरैः ॥२६॥

फिर दिव्य सहस्र वर्ष पर्यन्त महेन्द्र को शब्दशास्त्र और शब्दशास्त्रार्थ विषयक उपदेश प्रदान करने में समर्थ हुए हे सुरेश्वरी! जो मुनिगण शिष्य को शिक्षा प्रदान करते हैं ॥२६॥

ते च तां परिसंचिन्त्य प्रवर्तन्ते सुरेश्वरीम् ।
त्वं संस्तुता पूजिता च मुनीन्द्रैर्मनुमानवैः ॥२७॥

जो स्वयं अध्ययन में प्रवृत्त होते हैं वह कोई भी प्रथम तुम्हारा स्मरण किये अपने कार्य में प्रवृत्त नहीं हो सकते कितने ही मुनीन्द्र कितने ही मनु ॥२७॥

दैत्येन्द्रैश्च सुरैश्चापि ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ।
जडीभूतः सहस्रास्य पंचवक्त्रश्चतुर्मुखः ॥२८॥

कितने ही दानव कितने ही दैत्येन्द्र कितने ही अमर यही क्या ब्रह्मा और महादेव पर्यन्त तुम्हारी पूजा और तुम्हारा ही स्तव करते हैं किन्तु विष्णु जब सहस्रमुख से महादेव पांचमुख से और ब्रह्मा चार मुख से ॥२८॥

यां स्तोतुं किमहं स्तौमि तामेकास्येन मानवः ।
इत्युक्त्वा याज्ञवल्क्यश्च भक्तिनम्रात्मकंधरः ॥२९॥

तुम्हारा स्तव करने में जड़ीभूत होते हैं तो फिर मैं सामान्य मनुष्य एक मुख से क्या स्तव करूं कृतोपवास महर्षि याज्ञवल्क्य ने इस प्रकार कहकर भक्तिभाव से मस्तक झुकाया ॥२९॥

प्रणनाम निराहारो रुरोद च मुहुर्मुहुः।
ज्योतिरूपा महामाया तेन दृष्टाऽप्युवाच तम् ॥३०॥

देवी को प्रणाम किया और क्षणक्षण में रुदन करने लगे इस समय फिर उन ज्योतिरूप महामाया सरस्वती से नहीं रहा गया उन्होंने उनके समीप आकर कहा ॥३०॥

सुकवीन्द्रो भवेत्युक्त्वा वैकुण्ठं च जगाम ह।
याज्ञवल्क्यकृतं वाणीस्तोत्रमेतत्तु यः पठेत् ॥३१॥

"हे वत्स! तुम सुकवीन्द्र होओ" इस प्रकार वर दे वैकुण्ठ धाम को चली गई जो याज्ञवल्क्यकृत इस सरस्वती स्तव का पाठ करते हैं ॥३१॥

स कवीन्द्रो महावाग्मी बृहस्पतिसमो भवेत्।
महामूर्खश्च दुर्बुद्धिर्वर्षमेकं यदा पठेत् ॥३२॥

हे सुकवि! वाग्मी और बृहस्पति के समान बुद्धि शक्ति संपन्न हो सकते हैं यदि महामूर्ख मनुष्य भी एक वाणी स्तव पाठ करता है ॥३२॥

स पण्डितश्च मेधावी सुकवीन्द्रो भवेद्ध्रुवम् ॥३३॥

तो वह सहज में ही सुपंडित मेधावी और सुकवि होने में समर्थ होता है ॥३३॥

नोटः- जिस मनुष्य की स्मरणशक्ति कमजोर हो या बार-बार याद करने पर भूल जाते हो वह इस पाठ को ग्यारह बार नित्य तेतालिस दिन तक करने पर स्मरणशक्ति बढ़ जाती है । मंद बुद्धि वाले मनुष्य इसका पाठ अवश्य करे । इसके करने से मूर्ख भी बुद्धिमान हो जाते है ।

॥ *श्रीदेवीभागवते नवमस्कन्धे पञ्चमोऽध्याये हिन्दी टीका सहितं सरस्वती स्तोत्रम् सम्पूर्णम्* ॥



सरस्वती स्तोत्रम्

रविरुद्रपितामह-विष्णुनुतं, हरिचन्दन-कुङ्कुमपङ्कयुतम् ।
मुनिवृन्दगणेन्द्र-समानयुतं, तव नौमि सरस्वति-पादयुगम् ॥१॥

शशि-शुद्धसुधाहिमधामयुतं, शरदम्बरबिम्बसमानकरम् ।
बहु-रत्नमनोहर-कान्ति-युतं, तव नौमि सरस्वति-पादयुगम् ॥२॥

कनकाब्ज-विभूषितभूतिभवं, भवभावविभाषितभिन्नपदम् ।
प्रभुचित्तसमाहितसाधुपदं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥३॥

भवसागरमज्जन-भीतिनुतं, प्रतिपादित-संततिकारमिदम् ।
विमलादिकशुद्ध-विशुद्धपदं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥४॥

मतिहीन-जनाश्रय-पादमिदं, सकलागमभाषित-भिन्नपदम् ।
परिपूरितविश्वमनेक-भवं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥५॥

परिपूर्णमनोरथधामनिधिं, परमार्थविचार-विवेकविधिम् ।
सुरयोषितसेवितपादतलं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥६॥

सुरमौलि-मणिद्युति शुभ्रकरं, विषयादिमहाभयवर्ण-हरम् ।
निजकान्तिविलेपिताचन्द्रशिवं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥७॥

गुणनैक-कुलस्थिति-भीतिपदं, गुणगौरवगर्वित-सत्यपदम् ।
कमलोदरकोमलपादतलं, तव नौमि सरस्वति पादयुगम् ॥८॥

त्रिसन्ध्यं यो जपेन्नित्यं जले वापि स्थलेस्थितः।
पाठमात्राद् भवेद्प्राज्ञो, ब्रह्मनिष्ठः पुनः पुनः ॥९॥

॥ *सरस्वती स्तोत्रम् समाप्तम्* ॥



सिद्धसरस्वती स्तोत्रम् (१)

सौन्दर्य - माधुर्य - सुधासमुद्र - विनिद्र - पद्मासन - सन्निविष्टाम् ।
चञ्चद्-विपञ्चीकल-नादमुग्धां शुद्धां दधेऽन्तर्विसरत्सुगन्धाम् ॥१॥
श्रुतिःस्मृतिस्तत्पद-पद्मगन्धि-प्रभामयं वाङ्मयमस्तपारम् ।
यत्कोण-कोणाभिनिविष्टमिष्टं तामम्बिकां सर्वसितां श्रिताः स्मः ॥२॥

न कान्दिशीकं रवितोऽतिवेलं तं कौशिकं संस्पृहये निशातम् ।
सावित्रसारस्वतधामपश्यं शस्यं तपोब्राह्मणमाद्रियेतम् ॥३॥
श्रीशारदां प्रार्थित-सिद्धविद्यां श्रीशारदाम्भोजसगोत्रनेत्राम् ।
श्रीशारदाम्भोज-निवीज्यमानां श्रीशारदाङ्कानुजनिं भजामि ॥४॥
चक्राङ्ग-राजाञ्चित-पादपद्मां पद्मालयाऽभ्यर्थित-सुस्मितश्रीः ।
स्मितश्रिया वर्षित-सर्वकामा वामा विधेः पूरयतां प्रियं नः ॥५॥
बाहो रमायाः किल कौशिकोऽसौ हंसो भवत्याः प्रथितो विविक्तः ।
जगद्-विधातुर्महिषि त्वमस्मान् विधेहि सभ्यान्नहि मातरिभ्यान् ॥६॥
स्वच्छव्रतः स्वच्छचरित्रचञ्चुः स्वच्छान्तरः स्वच्छसमस्तवृत्तिः ।
स्वच्छं भवत्याः प्रपदं प्रपन्नः स्वच्छे त्वयि ब्रह्मणि जातु यातु ॥७॥
रवीन्दु-वह्नि-द्युति-कोटि-दीप्तं सिंहासनं सन्ततवाद्यगानम् ।
विदीपयन्मातृकधाम यामः कारुण्यपूर्णामृतवारिवाहम् ॥८॥

शुभ्रां शुभ्र-सरोज-मुग्धवदनां शुभ्राम्बरालङ्कृतां
शुभ्राङ्गीं शुभ-शुभ्रहास्यविशदां शुभ्रस्त्रगाशोभिनीम् ।
शुभ्रोद्दाम-ललाम-धाममहिमां शुभ्रान्तरङ्गागतां
शुभ्राभां भयहारि-भाव-भरितां श्रीभारतीं भावते ॥९॥
मुक्तालङ्कृत-कुन्तलान्तसरणिं रत्नालिहारावलिं
काञ्ची-कान्त-वलग्न-लग्नवलयां वज्राङ्गुलीयाङ्गुलिम् ।
लीला-चञ्चल-लोचनाञ्चल-चलल्लोकेश-लोलालकां
कल्यामाकलयेऽतिवेलमतुलां विल्कल्पवल्लीकलाम् ॥१०॥
प्रयतो धारयेद् यस्तु सारस्वतमिमं स्तवम् ।
सारस्वतं तस्य महः प्रत्यक्षमचिराद् भवेत् ॥११॥
वाग्बीजसम्पुटं स्तोत्रं जगन्मातुः प्रसादजम् ।
शिवालये जपन् मर्त्यः प्राप्नुयाद् बुद्धिवैभवम् ॥१२॥

सूर्यग्रहे प्रजपित: स्तव: सिद्धिकर: पर: ।
वाराणस्यां पुण्यतीर्थे सद्यो वाञ्छितदायक: ॥१३॥
पादाम्भोजे सरस्वत्या: शङ्कराचार्यभिक्षुणा ।
काशीपीठाधिपतिना गुम्फिता स्त्रक् समर्पिता ॥१४॥

काशीपीठाधीश्वरजगद्‌गुरु शंकराचार्य स्वामी श्रीमहेश्वरानन्द सरस्वती विरचित यह सिद्धसरस्वती स्तोत्र अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है । उन्होंने इस स्तोत्र के प्रत्येक श्लोक में माता सरस्वती का वर्णन करते हुए उनकी महिमाओं का वर्णन किया है । जो प्राणी मन्दिर में इस स्तोत्र का जप या पाठ करता है उसे बुद्धि एवं वैभव की प्राप्ति होती है, सूर्यग्रहण के अवसर पर जो इसका जप करता है, उसे सिद्धि की प्राप्ति होती है । वाराणसी जैसे पुण्यतीर्थ में जो इसका पाठ करते हैं, वे सब कुछ प्राप्त करते हैं । प्रत्येक दृष्टिकोण से यह स्तोत्र अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है ।

॥ *सिद्धसरस्वती स्तोत्रं समाप्तम्* ॥



सिद्धसरस्वती स्तोत्रम् (२)

विनियोग: ॐ अस्य श्रीसरस्वतीस्तोत्रमन्त्रस्य मार्कण्डेयऋषिः, स्त्रग्धरा-ऽनुष्टुपछन्दः, सरस्वतीदेवी, ऐं बीजं वद वद शक्तिः, स्वाहा कीलकं मम वाक्सिद्धयर्थं जपे विनयोगः।

न्यास: ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । ॐ ऐं तर्जनीभ्यां नमः । ॐ धीं मध्यमाभ्यां नमः । ॐ क्लीं अनामिकाभ्यां नमः । ॐ सौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः । ॐ श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास: ॐ ह्रीं हृदयाय नमः । ॐ ऐं शिरसे स्वाहा । ॐ धीं शिखायै वषट् । ॐ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । ॐ सौं कवचाय हुम् । ॐ श्रीं अस्त्राय फट् ।

ध्यानम् शुक्लां ब्रह्मविचार-सार-परमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणा-पुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम् ।
हस्ते स्फाटिक-मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम् ॥१॥

दोर्भिर्युक्तैश्चतुर्भिः स्फटिक-मणिमयीमक्षमालां दधाना
हस्तेनैकेन पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण ।
पाशं वीणां मुकुन्द-स्फटिकमणिनिभां भासमाना समाना
सा मे वादे च तथ्यं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना ॥२॥

या कुन्देन्दु-तुषार-हार-धवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणा-वरदण्ड-मण्डितकरा या श्वेतपद्मासना ।
या ब्रह्मा-ऽच्युत-शङ्कर-प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा ॥३॥

इस प्रकार से ध्यान करके निम्न मन्त्र का एक सौ आठ (१०८) बार जाप करे-

ॐ ह्रीं ऐं ध्रीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नमः ।



ह्रीं ह्रीं ह्रीं हृद्यैकबीजे शशि-रुचि-कमले कल्पविस्पष्टशोभे
भव्ये भव्यानुकूले शुभमतिवरदे विश्ववन्द्याङ्घ्रिपद्मे ।
पद्मे पद्मोपविष्टे प्रणत-जनमनोमोद-सम्पादयित्रि!
प्रोत्फुल्लज्ञानकूले हरिहरनमिते देवि! संसारसारे ॥१॥

ऐं ऐं ऐं जाप्यतुष्टे हिमरुचि-मुकुटे वल्लकीव्यग्रहस्ते
मातर्मातर्नमस्ते दह दह जडतां देहि बुद्धिं प्रशस्ताम् ।
विद्ये वेदान्तवेद्ये श्रुतिपरिपठिते मोक्षदे मुक्तिमार्गे
मार्गातीतस्वरूपे भव मम वरदे शारदे शुभ्रहारे ॥२॥

धीं धीं धीं धारणाख्ये धृति-मति-नुतिभिर्नामभिः कीर्त्तनीये
नित्ये नित्ये निमित्ते मुनिजन-नमिते नूतेन वै पुराणे ।
पुण्ये पुण्यप्रभावे हरिहरनमिते पूर्णतत्त्वस्वरूपे
मातर्मात्रार्थतत्त्वे! मति-मति-मतिदे! माधवप्रीतिनादे ॥३॥
क्लीं क्लीं क्लीं सुस्वरूपे दह दह दुरित पुस्तक-व्यग्रहस्ते
सन्तुष्टाकारचित्ते स्मितमुखि सुभगे जम्भृणि स्तम्भनीये! ।
मोहे मुग्धप्रबोधे मम कुरु कुमति-ध्वान्त-विध्वंसमीड्ये
गी-गौं-वाग्भारतीत्वं कविवृतरसने सिद्धिदे सिद्धिसाध्ये ॥४॥
सौं सौं सौं शक्तिबीजे कमल-भवसुखाम्भोजमूर्त्तिस्वरूपे
रूपे रूपप्रकाशे सकलगुणमये निर्गुणे निर्विकल्पे ।
न स्थूले नेव सूक्ष्मेऽप्यविहितविभवे जाप्यविज्ञानतुष्टे
विश्वे विश्वान्तराले सकलगुणमये निष्कले नित्यशुद्धे ॥५॥

श्रीं श्रीं श्रीं स्तौमि त्वाऽहं मम खलु रसनां मा कदाचित् त्यज त्वं
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु मम मनो पातु मां देवि! पापात् ।
मा मे दुःखं कदाचित् क्वचिदपि विषये पुस्तके नाकुलत्वं
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुण्ठा कदाऽपि ॥६॥

इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो
वाणी वाचस्पतेरप्यविदितविभवो वाक्यतत्त्वार्थवेत्ता ।
स स्यादिष्टार्थलाभी सुतमिव सततं पातु तं सा च देवी
सौभाग्यं तस्य लोके प्रसरतु कविता विघ्नमस्तं प्रयातु ॥७॥

निर्विघ्न तस्य विद्या प्रभवति सततं चाऽऽशु ग्रन्थप्रबोधः
कीर्त्तिस्त्रैलोक्यमध्ये निवसति वदने शारदा तस्य साक्षाद् ।
दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकलगुणनिधिः सन्ततं राजमान्यो
वाग्देव्याः सम्प्रसादात् त्रिजगति विजयो जायते तस्य साक्षाद् ॥८॥

ब्रह्मचारी व्रती मौनी त्रयोदश्यामहर्निशम् ।
सारस्वतो जनः पाठाद् भवेदिष्टार्थलाभवान् ॥९॥
पक्षद्वये त्रयोदश्यामेकविंशतिसंख्यया
अविच्छिन्नं पठेद्यस्तु सुभगो लोकविश्रुतः ।
वाञ्छितं फलमाप्नोति षण्मासैर्नाऽत्र संशयः ॥१०॥

ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं वद वद वाग्वादिन्यै स्वाहा । मालां शिरसि धृत्वा-

त्वं माले! सर्वदेवानां सर्वकामप्रदा मता ।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तु ते ॥ इत्यर्पणम् ।

यह सिद्धसरस्वती स्तोत्र सनत्कुमार संहिता से लिया गया है । जो प्राणी इस स्तोत्र में आये हुए न्यासों को सविधि करके माता सरस्वती का ध्यान कर एक सौ आठ बार 'ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नमः' इस मन्त्र का पाठ करते हैं, उन्हें मनोवांछित फल की प्राप्ति होती है । इसके प्रत्येक श्लोक में सम्पुट मन्त्रों का समावेश है, इस कारण जो प्राणी इसका पाठ करते हैं उन्हें विद्या की प्राप्ति होती है तथा वे सभी जगह विजय प्राप्त करते हैं । इसके पाठ करने से संसार में कीर्ति एवं ख्याति अर्जित होती है ।

नीलसरस्वती स्तोत्रम्

घोररूपे महारावे सर्वशत्रुभयङ्करि ।
भक्तेभ्यो वरदे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥१॥
ॐ सुराऽसुरार्चिते देवि सिद्धगन्धर्वसेविते ।
जाड्य-पापहरे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥२॥
जटाजूटसमायुक्ते लोलजिह्वान्तकारिणि ।
द्रुतबुद्धिकरे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥३॥
सौम्यक्रोधधरे रूपे चण्डरूपे नमोऽस्तु ते ।
सृष्टिरूपे नमस्तुभ्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥४॥
जडानां जडतां हन्ति भक्तानां भक्तवत्सला ।
मूढतां हर मे देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥५॥
ह्रूं ह्रूं ह्रूं कामये देवि बलिहोमप्रिये नमः ।
उग्रतारे नमो नित्यं त्राहि मां शरणागतम् ॥६॥

बुद्धिं देहि यशो देहि कवित्वं देहि देहि मे ।
मूढत्वं च हरेद् देवि त्राहि मां शरणागतम् ॥७॥
इन्द्रादि-विलसद्-द्वन्द्ववन्दिते करुणामयि ।
तारे ताराधिनाथास्ये त्राहि मां शरणागतम् ॥८॥
अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां यः पठेन्नरः ।
षण्मासैः सिद्धिमाप्नोति नाऽत्र कार्या विचारणा ॥९॥
मोक्षार्थी लभते मोक्षं धनार्थी लभते धनम् ।
विद्यार्थी लभते विद्यां तर्कव्याकरणादिकाम् ॥१०॥
इदं स्तोत्रं पठेद्यस्तु सततं श्रद्धयाऽन्वितः ।
तस्य शत्रुः क्षयं याति महाप्रज्ञा प्रजायते ॥११॥
पीडायां वाऽपि संग्रामे जाड्ये दाने तथा भये ।
य इदं पठति स्तोत्रं शुभं तस्य न संशयः ।
इति प्रणम्य स्तुत्वा च योनिमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥१२॥

॥ इति नीलसरस्वती स्तोत्रं समाप्तम् ॥

सरस्वत्यष्टकम्

शतानीक उवाच

महामते! महाप्राज्ञ! सर्वशास्त्र-विशारद! ।
अक्षीणकर्मबन्धस्तु पुरुषो द्विजसत्तम ॥१॥
मरणे यज्जपेज्ज्याप्यं पञ्चभावमनुस्मरन् ।
परम्पदमवाप्नोति तन्मे ब्रूहि महामुने! ॥२॥

शौनक उवाच

इदमेव महाराज! पृष्टवांस्ते पितामहः ।
भीष्मं धर्मविदां श्रेष्ठं धर्मपुत्रो युधिष्ठिरः ॥३॥

युधिष्ठिर उवाच

पितामह! महाप्राज्ञ! सर्वशास्त्र-विशारद! ।
बृहस्पतिस्तुता देवी वागीशाय महात्मने ।
आत्मानं दर्शयामास सूर्यकोटि-समप्रभम् ॥४॥

सरस्वत्युवाच

वरं वृणीष्व भगवन्! यत्ते मनसि वर्त्तते ।

बृहस्पतिरुवाच

यदि मे वरदा देवि! दिव्यज्ञानं प्रयच्छ नः ॥५॥

देव्युवाच

हन्त! ते निर्मलं ज्ञानं कुमतिध्वंसकारकम् ।
स्तोत्रेणाऽनेन ते भक्त्या मां स्तुवन्ति मनीषिणः ॥६॥

बृहस्पतिरुवाच

लभते परमं ज्ञानं यत् सुरैरपि दुर्लभम् ।
प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया-प्रसादतः ॥७॥

सरस्वत्युवाच

त्रिसन्ध्यं प्रयतो नित्यं पठेदष्टकमुत्तमम् ।
तस्य कण्ठे सदा वासं करिष्यामि न संशयः ॥८॥

॥ इति श्रीपद्मपुराणे दिव्यज्ञानप्रदायकं सरस्वत्यष्टकं समाप्तम् ॥

सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलिः

विद्या की प्राप्ति के लिये जो प्राणी माँ सरस्वती के निम्न एक सौ आठ नामों का उच्चारण करते हुए उन्हें श्वेतपुष्प अर्पित करते हैं, उन्हें मनोवांछित फलों की प्राप्ति होती है।

१. ॐ सरस्वत्यै नमः
२. ॐ महाभद्रायै नमः
३. ॐ महामायायै नमः
४. ॐ वरप्रदायै नमः
५. ॐ श्रीप्रदायै नमः
६. ॐ पद्मनिलयायै नमः
७. ॐ पद्माक्ष्यै नमः
८. ॐ पद्मवक्त्रायै नमः
९. ॐ शिवानुजायै नमः
१०. ॐ पुस्तकभृते नमः
११. ॐ ज्ञानमुद्रायै नमः
१२. ॐ रमायै नमः
१३. ॐ परायै नमः
१४. ॐ कामरूपायै नमः
१५. ॐ महाविद्यायै नमः
१६. ॐ महापातकनाशिन्यै नमः
१७. ॐ महाश्रयायै नमः
१८. ॐ मालिन्यै नमः
१९. ॐ महाभोगायै नमः
२०. ॐ महाभुजायै नमः

२१. ॐ महाभागायै नमः
२२. ॐ महोत्साहायै नमः
२३. ॐ दिव्याङ्गायै नमः
२४. ॐ सुरवन्दितायै नमः
२५. ॐ महाकव्यै नमः
२६. ॐ महापाशायै नमः
२७. ॐ महाकारायै नमः
२८. ॐ महाङ्कुशायै नमः
२९. ॐ पीतायै नमः
३०. ॐ विमलायै नमः
३१. ॐ विश्वायै नमः
३२. ॐ विद्युन्मालायै नमः
३३. ॐ वैष्णव्यै नमः
३४. ॐ चन्द्रिकायै नमः
३५. ॐ चन्द्रवदनायै नमः
३६. ॐ चन्द्रलेखाविभूषितायै नमः
३७. ॐ सावित्र्यै नमः
३८. ॐ सुरसायै नमः
३९. ॐ देव्यै नमः
४०. ॐ दिव्यालङ्कारभूषितायै नमः
४१. ॐ वाग्देव्यै नमः
४२. ॐ वसुधायै नमः
४३. ॐ तीव्रायै नमः
४४. ॐ महाभद्रायै नमः
४५. ॐ महाबलायै नमः
४६. ॐ भोगदायै नमः
४७. ॐ भारत्यै नमः
४८. ॐ भामायै नमः
४९. ॐ गोविन्दायै नमः
५०. ॐ गोमत्यै नमः

५१. ॐ शिवायै नमः
५२. ॐ जटिलायै नमः
५३. ॐ विन्ध्यवासायै नमः
५४. ॐ विन्ध्याचलविराजितायै नमः
५५. ॐ चण्डिकायै नमः
५६. ॐ वैष्णव्यै नमः
५७. ॐ ब्राह्म्यै नमः
५८. ॐ ब्रह्मज्ञानैकसाधनायै नमः
५९. ॐ सौदामिन्यै नमः
६०. ॐ सुधामूर्त्यै नमः
६१. ॐ सुभद्रायै नमः
६२. ॐ सुरपूजितायै नमः
६३. ॐ सुवासिन्यै नमः
६४. ॐ सुनासायै नमः
६५. ॐ विनिद्रायै नमः
६६. ॐ पद्मलोचनायै नमः
६७. ॐ विद्यारूपायै नमः
६८. ॐ विशालाक्ष्यै नमः
६९. ॐ ब्रह्मजायायै नमः
७०. ॐ महाफलायै नमः
७१. ॐ त्रयीमूर्त्यै नमः
७२. ॐ त्रिकालज्ञायै नमः
७३. ॐ त्रिगुणायै नमः
७४. ॐ शास्त्ररूपिण्यै नमः
७५. ॐ शुम्भासुरप्रमथिन्यै नमः
७६. ॐ शुभदायै नमः
७७. ॐ स्वरात्मिकायै नमः
७८. ॐ रक्तबीजनिहन्त्र्यै नमः
७९. ॐ चामुण्डायै नमः
८०. ॐ अम्बिकायै नमः

८१. ॐ मुण्डकायप्रहरणायै नमः
८२. ॐ धूम्रलोचनमर्दनायै नमः
८३. ॐ सर्वदेवस्तुतायै नमः
८४. ॐ सौम्यायै नमः
८५. ॐ सुरासुरनमस्कृतायै नमः
८६. ॐ कालरात्र्यै नमः
८७. ॐ कलाधारायै नमः
८८. ॐ रूपसौभाग्यदायिन्यै नमः
८९. ॐ वाग्देव्यै नमः
९०. ॐ वरारोहायै नमः
९१. ॐ वाराह्यै नमः
९२. ॐ वारिजासनायै नमः
९३. ॐ चित्राम्बरायै नमः
९४. ॐ चित्रगन्धायै नमः
९५. ॐ चित्रमाल्यविभूषितायै नमः
९६. ॐ कान्तायै नमः
९७. ॐ कामप्रदायै नमः
९८. ॐ वन्द्यायै नमः
९९. ॐ विद्याधरसुपूजितायै नमः
१००. ॐ श्वेताननायै नमः
१०१. ॐ नीलभुजायै नमः
१०२. ॐ चतुर्वर्गफलप्रदायै नमः
१०३. ॐ चतुराननसाम्राज्यायै नमः
१०४. ॐ रक्तमध्यायै नमः
१०५. ॐ निरञ्जनायै नमः
१०६. ॐ हंसासनायै नमः
१०७. ॐ नीलजङ्घायै नमः
१०८. ॐ ब्रह्मविष्णुशिवात्मिकायै नमः

॥ सरस्वत्यष्टोत्तरशतनामावलि समाप्तः ॥

सरस्वती वन्दना

विनती करता बालक तेरे, बनके आज सवाली माँ।
ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥१॥

विद्या बुद्धि ज्ञान स्मरण, वाणी के तुम दानी हो।
'सत्वगुणों' से है परमेश्वरि, सरस्वती कहलाती हो॥
वीणा वादिनी तुम ही करती, सर्व जगत रखवाली माँ।
ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥२॥

एक हाथ वेदों की पुस्तक, दूजे वीणा धारी हो।
कमल के आसन बैठी मैया, करती हंस सवारी हो॥
वस्त्राभूषण श्वेत कमल-सा, लगती प्यारी-प्यारी माँ।
ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥३॥

ब्रह्मा जी के संग विराजित, मिलके सृष्टि रचाती हो ।
अंधकार में सरस्वती माँ, तुम जी ज्योति फैलाती हो ॥
सबकी झोली भरे ज्ञान से, मेरी क्यों है खाली माँ ।
ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥४॥

कोटि-कोटि अपराध क्षमा कर, बच्चों को गुणवान करो ।
सारे जग में होऊँ रोशन ऐसा माँ विद्वान करो ॥
सारा जग ये तुम्हारे बाग हैं, तुम ही एक हो माली माँ ।
ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥५॥

कहे 'ज्ञानी' भजे जो 'शारदा', मन वांछित फल पाता है ।
मूर्ख भी बने विद्या वारिधी, जो शरण में आता है ॥
अमर हो गये वो मानव, जिसने दृष्टि डाली माँ ।
ज्ञान पुंज कर दे मूर्ख को, जय हे वीणा वाली माँ ॥६॥



सरस्वती चालीसा

दोहा

जय जय मातु सरस्वती, बुद्धि विद्या की खानि ।
हंसवाहिनी अम्बिके, जय जय वीणापाणि ॥

चौपाइयाँ

जय श्री सकल बुद्धि बल रासी । जय सर्वज्ञा जय अविनाशी ॥
जय जय जय वीणा करधारिणि । हंसवाहिनी जय मृदु हासिनि ॥
रूप चतुर्भुज तुम्हारो माता । तीनि लोक मँह तुम विख्याता ॥
वाल्मीकि रह अत्याचारी । तुम्हरी कृपा भये कवि भारी ॥
कालिदास भए अति विख्याता । तुम्हरी दया अहै सब माता ॥
तुलसी सूर आदि विद्वाना। तुम्हरो सुयश सदैव बखाना ॥

शरदइन्दु सम वदन तुम्हारो। रूप चतुर्भुज अतिशय प्यारो ॥
कोटि सूर्य सम तन द्युति पावन। राजहंस तुम्हारो शचि वाहन ॥
कानन कुण्डल लोल सुहावहिं। उरमणिमाल अनूप दिखावहिं ॥
वीणा पुस्तक अभय धारिणी। जगन्मातु तुम जग विहारिणी ॥
ब्रह्मासुता अखण्ड अनूपा। तुम्हरे गुण गावत सुरभूपा ॥
हरिहर करहिं तुम्हरो वन्दन। वरुण कुवेर करहिं अभिनन्दन ॥
मधु कैटभ की मति हरि लीन्हीं। पल महँ बधकरि तुम गति दीन्ही॥
तुमही रूप अनूप बनावा। रक्तबीज कहें धरणि गिरावा ॥
आदिशक्ति तुम प्रकट भवानी। सचराचर स्वामिनि कल्याणी॥
तुम्हरो नाम जपै जो कोई। विद्या बुद्धि पावे जन सोई ॥
तुम साहित्य सरोवर वासिनि। ललित कला संगीत प्रकासिनि॥
चारु कल्पनाशीला माया। करहु सदा सेवक पर दाया॥

सरस्वती पूजन जो करहीं। निश्चय ते भवसागर तरहीं ॥
विद्या, बुद्धि मिलहि सुखदानी। जय जय जय शारदा भवानी॥
तुम्हरी कृपा मिटहिं सब पीरा। सेवक होंहि तुम्हारे धीरा ॥
तुम जननी ब्रह्माण्ड निवासिनि। सत-रज-तम-गुण की प्रकासिनि ॥
जगदम्बा तुम अगजग भरणी। बुद्धि विधातृ सुमंगल करणी ॥
दुःख दरिद्र सव जाहिं नसाई। तुम्हरी कृपा न कछु कहि जाई ॥
परम पुनीत जगत अधारा। मालु अहै शुचि ज्ञान तुम्हारा ॥
सनकादिक नित गुण गण गावहिं। नारद मुनि तब सुयश सुनावहिं ॥
जा पर कृपा तुम्हारी होई। ता पर कृपा करहिं सब कोई ॥
शुभ्रवसन कर राजत कंगन। कटि किंकिणी मधुर नूपुर ध्वन ॥
आदिशक्ति तुम परम सयानी। महिमा वेद पुराण बखानी ॥
जगमंगल करती दुःख हरती। सृष्टिस्वरूपा पालन करती ॥

तुम माया, तुम प्रकृति सनातन। आदिसृष्टि तुम अतिशय पावन॥
देवदनुज आरती उतारहिं। जय जय जय जय मातु उचारहिं॥
तुम्हारी कृपा मिलहि शुचि ज्ञाना। होई सकल विधि अति कल्याना॥
मैं सेवक तुमही हो माता। सयश तुम्हार भुवन विख्याता॥
अपराध क्षमा कर दीजै। मातु शरण मोकुह तुम लीजै॥
जो जन सेवा करहिं तुम्हारी। तिन कह कतहुं नाहिं दुख भारी॥
जो यह पाठ करै चालीसा। तापर कृपा करहिं जगदीशा॥

॥ दोहा ॥

जय शारद, जय सरस्वती, जय माता जगदम्ब।
दीन जानि कृपा, देहु दया अवलम्ब॥



माँ शारदा की स्तुति

माँ शारदे! कहां तू वीणा बजा रही हो।
किस मंजु ज्ञान से तू जग को लुभा रही हो॥
किस भाव में भवानी तू मग्न हो रही हो।
विनती नहीं हमारी क्यों माँ तू सुन रही हो॥
हम दीन बाल कब से विनती सुना रहे हैं।
चरणों में तेरे माता! हम सिर झुका रहे हैं॥
अज्ञान तुम हमारा माँ शीघ्र दूर कर दो।
द्रुत ज्ञान शुभ्र हममें ओ वीणापाणि भर दो॥
बालक सभी जगत के, सुत मातु! हैं तुम्हारे।
प्राणों से प्रिय तुम्हें हैं, हम पुत्र सब दुलारे॥
हमको दयामयी! ले निज गोद में पढ़ाओ।
अमृत जगत का हमको, माँ शारदे पिलाओ॥
मातेश्वरी! सुनो अब सुन्दर विनय हमारी।
कर दया-दृष्टि हरलो, बाधा जगत की सारी॥

सरस्वती की आरती

जय सरस्वती माता, जय सरस्वती माता ।
विद्या बुद्धि प्रदायक, तुम हो सुखदाता ॥ जय०॥
कुन्द इन्दु सम शोभा तन की ज्योति झरे ।
जो सेवक बनि आये, सब भंडार भरे ॥ जय०॥
वीणा दण्ड कमण्डलु माला कर सोहै ।
हंसवाहिणी देवी, त्रिभुवन मन मोहै ॥ जय०॥
श्वेत स्वरुपा सुन्दरि, श्वेत वस्त्र धारी ।
श्वेत पदम पर बैठीं, सबको सुखकारी ॥ जय०॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, इन्द्र आदि देवा ।
सनकादिक और नारद, सदा करें सेवा ॥ जय०॥
तुम प्रताप सों माता, मूढ़ भये ज्ञानी ।
निज दासन पर करतीं, करुणा कल्याणी ॥ जय०॥
त्रिभुवन यश विस्तारयो, गुण गावें देवा ।
सुर-नर-मुनि सब निशिदिन, करें विविध सेवा ॥ जय०॥
मातेश्वरी की आरती, जो कोई नर गावे ।
परम ज्ञान सो पावे, जग यश फैल जावे ॥ जय०॥

पूजन सामग्री

१. नवनीत (दही)
२. दूध
३. खील
४. तिल
५. गन्ना, गन्ने का रस
६. गुड़
७. पेड़ा (खोवा)
८. चावल
९. केला
१०. नारियल
११. सुपारी
१२. पान
१३. मूली
१४. अदरक
१५. बेर
१६. सफेद फूल, सफेद फूलों की माला
१७. सुन्दर आभूषण
१८. चन्दन

सरस्वती के विभिन्न मंत्र और उनका प्रयोग

१. ॐ ऐं नमः शारदे श्रीं शुद्धे नमः शारदे ऐं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥
२. ॐ ऐं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥
३. ॐ ह्रीं ऐं नमो भगवती ऐं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥
४. ॐ ह्रीं ऐं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं मं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अक्षमाले अक्षरमालिका समलंकृते वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥
५. ॐ ज्यां ह्रीं जयजय जगन्मातः ऐं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥
६. ऐं क्लीं कल्याणी कामधारिणी वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥
७. ॐ क्लीं ऐं ततो वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥
८. ॐ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं नमश्शुद्धफलदे ऐं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥
९. ॐ ऐं यां यीं यूं यैं यौं यः ऐं वद वद वाग्वादिनी स्वाहा ॥

माता सरस्वती के उपरोक्त ९ मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जो प्राणी प्रतिदिन जाप करता है उसे विद्या की प्राप्ति, धन की प्राप्ति, यश-कीर्त्ति की प्राप्ति निःसन्देह होती है।

विद्या प्राप्ति यंत्र

११	१	८
४	७	९
५	१२	३

इस यंत्र को गुरुवार के दिन से लिखना आरम्भ करे। प्रतिदन २२५ यन्त्र केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखे और उन यन्त्रों को उसी दिन पूजन करके नदी के जल में प्रवाहित कर दे।१५ दिन तक इसी प्रकार निरन्तर करता रहे तो साधक को इच्छित विद्या की प्राप्ति होती हैं ।एक यन्त्र ताबीज में भर कर अपनी दायी भुजा में धारण करना चाहिए।

श्री बगलामुखी स्तोत्रम्

(हिन्दी-अनुवाद सहित)



इनकी पूजा-पाठ करने से ग्रह-शत्रु-रोग पीड़ा, वशीकरण, मोहन, उच्चाटन, मुकदमा आदि का समाधान करते हैं।

माता श्री बगलामुखी जी को पीताम्बरा देवी के नाम से भी जाना जाता है। इनकी गणना दस महाविद्याओं में मानी गई है।

माँ पीताम्बरा जी की पूजा-पाठ करके साधक ग्रह-शत्रु-रोग पीड़ा, वशीकरण, मोहन, उच्चाटन, मुकदमा आदि के समाधान करते हैं। मंत्र जप के अनुष्ठान विशेष प्रकार के फलदायक व सिद्धिदायक माने जाते हैं।

पृष्ठ संख्या : ८०

मूल्य : रु. २०.००

डाक व्यय पृथक

प्रस्तुत पुस्तक में कवच, स्तोत्र संस्कृत-हिन्दी अनुवाद सहित, बगलातंत्र अष्टोत्तरशतनाम-स्तोत्र, १०८ नाम माला, चालीसा, आरती आदि देकर अधिक उपयोगी बनाया गया है। माताश्री का ध्यान एवं पूजा के लिये पुराणोक्त बहुरंगी चित्र व यंत्र भी दिये गये हैं। पाठ करने से माँ की कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है।

बहुरंगी चित्र व यंत्र के साथ

श्रीसूक्तम्

लक्ष्मीसूक्त-पुरुषसूक्त-हिन्दी अनुवाद सहित

दरिद्रता और दीनताहीन जीवन से छूटने के लिय ऋषियों ने अनेक प्रकार के अनुष्ठान, जप-तप औ दान आदि कर्मों का विधान कहा है।

ऋग्वेद के परिशिष्ट-श्रीसूक्त में धन प्राप्ति के लिय मंत्र हैं। **वाराणसी के विद्वान् उमेश मिश्र (सुपुत्र श्री वेणीराम गौड़)** ने इन मंत्रों का सरल हिन्दी में अनुवाद किया है। सम्पुटित श्रीसूक्त, ऋणहर्त्ता गणेशस्तोत्र, बिक्री वृद्धि के लिये मंत्र, कुबेर पूजन एवं श्रीयंत्र व उनकी पूजनविधि आदि भी पुस्तक में सम्मिलित कर दिये हैं जिनके नियमपूर्वक पूजा-पाठ करने से निश्चय ही श्रीलक्ष्मीजी की प्राप्ति होती है।



पृष्ठ संख्या : १६०

मूल्य : रु. ३०.००

डाक व्यय पृथक

इस पुस्तक में ऋग्वेद में वर्णित धन प्राप्ति के मंत्र दिये गये हैं।

प्रत्येक पुस्तक के साथ पूजा के लिये **रंगीन श्रीयंत्र मुफ्त** संलग्न है।



ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नमः



ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नमः

ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नमः



ॐ ह्रीं ऐं धीं क्लीं सौं श्रीं सरस्वत्यै नमः

